कविता

श्रद्धाञ्जलि



प्रकाशक—

मन्त्री, भारतीय साहित्य-भवन,

कटरा, छपरा

सं० १९९१ वि०

प्रथम बार—१०००] [मूल्य—साहित्यानुराग

० बाबू महेन्द्र प्रसाद तथा स्व० बाबू रामेश्वरलाल जैनकी
[illegible]स्मृतिमें स्थानीय प्रेसर्स लाखर [illegible] हरीराम फार्मके

दो शब्द

सज्जनो !

भवन द्वारा आहूत कवि-सम्मेलनोंमें समय-समयपर जो कविताएँ विद्वान् कविमहोदयोंने पढ़ी हैं, उन्हींमेंसे कुछ चुनी हुई कविताएँ इस पुस्तिकामें संगृहीत हुई हैं। स्थानीय साहित्यसेवियों एवं कवियोंका उत्साह-वर्द्धन करने तथा सर्वसाधारण साहित्य-प्रेमियों तक उनकी रचनाओंको पहुँचानेके विचारसे ही इसका प्रकाशन किया जा रहा है। इसे प्रकाशित करते एवं आप सज्जनोंके आगे रखते हमें जितनी ही प्रसन्नता हो रही है, उतना ही हमारा हृदय उन दो मनस्वी व्यक्तियोंके अभावके कारण शोकान्वित भी हो रहा है, जिनकी स्मृतिमें इसका प्रकाशन किया जा रहा है।

केवल छपरेमें नहीं, सम्पूर्ण बिहार प्रान्तमें कौन ऐसा मनुष्य होगा, जो स्वर्गीय बाबू महेन्द्र प्रसादके नामसे सुपरिचित न हो ? कौन ऐसी स्थानीय सार्वजनिक संस्था होगी, जिसमें उन्होंने भाग न लिया हो और जिसमें अपनी अपूर्व योग्यता एवं कर्मण्यताका परिचय न दिया हो ? 'भवन' के तो वे सभापति थे ही। इसकी भलाईके लिये वे सतत सचेष्ट रहते थे। उनकी एकान्त इच्छा थी 'भवन' को अपने निजी भवनमें—स्थायी रूपमें—देखनेकी; और इस चेष्टासे वे कभी विरत नहीं हुए। जीवनकी अन्तिम घड़ी तक उन्हें भवनका ख़याल बना रहा।

दूसरे, मँगनीराम हरदत्तरायके सुप्रसिद्ध फार्मके स्वत्वाधिकारी बाबू रामेश्वरलाल जैन जैसे उदारचेताका शुभ नाम किसे अविदित है ? आपकी योग्यता देखकर सरकारने आपको म्युनिसिपल कमिश्नर तथा जेल-परिदर्शक मनोनीत किया था। आपने कुछ समय तक स्थानीय इम्पीरियल बैंकके कोषाध्यक्षका काम भी किया था। आप अपनी उदारता तथा गुप्त रूपसे दातव्यके लिये यथेष्ट प्रसिद्ध थे। कभी कोई याचक आपके पाससे विफलमनोरथ नहीं लौटा। सार्वजनिक सेवाकार्योंमें आप

सदा अग्रसर और मुक्तहस्त रहते थे। पुस्तकालयके तो आप ाण ही थे। जब जब पुस्तकालयपर आर्थिक अभावका पहाड़ टूटा, त तब आपने ही अपनी उदारतासे उसकी रक्षा की और उसके संचा नमें सदा सब प्रकारसे सहायता देते रहे। आपने पुस्तकालयके लिये स ान्त्र मकान बनवानेका पूरा व्यय-भार अपने ऊपर ले लिया था। यदि ः चमें कोई विघ्न उपस्थित न होता अथवा आपका इस असमयमें देहाः ान न होता, तो आप अवश्य ही अपना वचन पूरा कर दिखाते।

इन्हीं दोनों सज्जनोंकी पुण्य-स्मृतिमें यह संकलन प्रकाशित कि जा रहा है। आशा है, इसे सुधी-समुदाय हृदयसे अपनायगा। सा ही यह भी आशा की जाती है कि जिस संस्थाका उपर्युक्त सम्मा नीय व्यक्तियोंने अपने जीवन-कालमें समुचित रूपसे संचालन किया, उसे सुदृढ़ नींवपर सुप्रतिष्ठित किये रहनेमें हम उनके अनुयायी किसी कार पश्चात्पद नहीं होंगे एवं दिन दिन उसकी उन्नतिकी ही चेष्टा करते ंगे।

अन्तमें बाबू तेजपाल सरावगीको, जिन्होंने इस श्रद्धाञ्जलिको ाका-शित करनेका पूरा खर्च दिया है, हम धन्यवाद दिये बिना नहीं रह स ते। उनके अतिरिक्त स्थानीय रईस और कवितामर्मज्ञ बाबू भगवती साद सिंह भी हमारे धन्यवाद-भाजन हैं, जिन्होंने कविताओंमें यथ थान संशोधनादि करनेकी कृपा की है। साथ ही हमें यह प्रकट करते प्र न्नता होती है कि इस पुस्तिकाको इस रूपमें लाने और प्रूफ आदि सं ाधन करनेमें हिन्दी-संसारके सुपरिचित पं० कार्तिकेयचरण मुखोपाः ायने भी हमारी पूरी सहायता की है। अतः वे भी हमारे धन्यवादके पा हैं।

भारतीय साहित्य-भवन
५-७-२४

निवेदक—
राजनाथ सहाय, मन ो।

हा ! बाबू महेन्द्रप्रसाद !

सच्चा सेवक देश-जाति--साहित्य--धर्म्म का ।
सैनिक साहस--त्याग--प्रेममय पूत--कर्म का ॥
धनियों का आदर्श, गरीबों का जो बल था ।
दुखियों का सर्वस्व, शुष्क पौधों का जल था ॥
प्रेम मूर्ति घनश्याम, प्रेम-पय बरसाता था ।
शान्ति-सुधा का स्रोत सदा जो सरसाता था ॥
अनुपम था वह रत्न अलौकिक दिव्य हमारा ।
सारन--स्वर्ग--महेन्द्र, देश का परम दुलारा ॥

—रामअयोध्या सिंह

हा ! बाबू महेन्द्रप्रसाद !

यहाँ इन्साँ नहीं रहता है लेकिन नाम रहता है ।
कि लोगों के दिलों पर नक्श उसका काम रहता है ।
वही इनसान है जिससे कि हिन्दू ओ मुसलमाँ को ।
हमेशा चैन रहता है सदा आराम रहता है ।
वही इन्सान है जिससे कि उसके मातहत खुश हों ।
जो अपने काम में मशगूल सुब्हो शाम रहता है ।
वही है आदमी पैदा करे जो नाम दुनिया में ।
बराबर जिससे हर छोटे बड़े को काम रहता है
बड़े लोगों में गिनती उसकी होती है ज़माने में ।
दिलों में याद उसकी और ज़बां पर नाम रहता है
ग़ज़ब है मौत 'अन्क़ा' ऐसे नामी की ज़माने में ।
समझ हैरान होती है खोदा के कारखाने में ॥

—महबूब अहमद 'अन्क़ा' छपरवी

———

हा ! बाबू रामेश्वर लाल जैन !

बैभव-भक्त ललाम 'राम' प्रख्यात-नाम थे ;

गुणि जन आश्रय कीर्त्ति परायण सुयश धाम थे ।

जीवन था वह दीन-दुःखितों का जीवन-धन ,

सहृदयता का स्रोत स्नेह-सुख-सुधा-सरस--घन ।

'अथक परिश्रम' कार्य्य-सिद्धि का मूल मंत्र था ,

सत्य विनय-सारल्य-बिभूषित सफल तंत्र था ।

देश--धर्म--साहित्य--भक्ति का रत्न अनूठा ।

चला गया वह हाय ! हाय ! क्यों हमसे रूठा ?

—रामअयोध्या सिंह ।

हा ! बाबू रामेश्वर लाल जैन

मौत का रंग क्या अजब है रंग ।
देख कर जिसको अक्ल भी है दंग
न यह लड़का न यह जवाँ समझे ।
न यह घंटा न यह घड़ी देखे ।
बुड्ढे जीते रहें जवान मरें ।
क्या कहें कहने वाले क्या न कहें ।
उस का जीना है जिससे सुख पायें ।
उस का मरना है जिसका जस गायें ।
ऐसा दानी जो गुप्त दान करे ।
जो बिपत में हो उसका मान करे ॥

—महबूब अहमद 'अन्क़ा' कपरवं ।

कृपाकर शुद्ध कर लीजिये ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	१६	मारूत	मारुत
५	३	पाट	पीट
,,	११	का	को
७	८	आगारा	अगारा
९	१२	हया	ह्यां
,,	१४	उलझगई	उरझत
,,	१५	सरुझ गई	सरुझ
,,	,,	चखय	चख
,,	१७	बिखरगये	बिखरत
६	१२	सुवन	वन
,,	२०	उशीर के	उशीर
१०	३	तलफनि है	तलफति
,,	८	रहयो	रह्यो
,,	१२	पंचाग्नि	पंचागिनि
,,	१५	विरहिनि	विरह
११	१७	स्मृति	सुस्मृति
१३	८	घाती	धोती
२६	३	दापक	दीपक

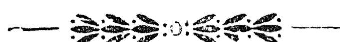
निवेदन।

पूरी पुस्तक छप जाने के बाद 'भवन' के सभापति बाबू भगवती प्रसाद सिंह जी ने इसे आद्यन्त देखने और पाठक वर्ग के सुभीते के लिये यह शुद्धि-पत्र प्रस्तुत करने की कृपा की है।

मन्त्री।

॥ श्रीः ॥

कविता-श्रद्धाञ्जलि



समस्याः—"ऋतु वसन्त की आई है।"

रचयिता—बाबू भगवती प्रसाद सिंह "शूर", कुबरा।

(१)

फूलों में गंध समाई है। पत्तों पर रंगत छाई है ॥
भौंरों ने गूंज मचाई है। कोयल ने टेर लगाई है ॥
स्वागत की बजी बधाई है।
यह ऋतु वसन्त की आई है ॥

([illegible])

हवा चाल अपनी [illegible] [illegible] है विचलाता ॥
शीतल मन्द सुगंध [illegible] [illegible] है बिसराता ॥
अब फिर [illegible] छाई है।
यह ऋतु वसन्त की आई है ॥

(३)

लतिकाओं में हरियाली है। अभिनव पुष्पों में लाली है।
विहग-वृन्द में खुशहाली है। मद में झूका बनमाली है॥
यह नूतन शोभा आई है।
क्या ऋतु बसन्त की आई है॥

(४)

बन उपवन सब हैं लहराते। टेसू फूले नहीं समाते॥
बिरहानल को फूंक जगाते। नेही जन हैं भस्म रमाते॥
फिर बन की चाट समाई है॥
जब ऋतु बसन्त की आई है॥

(५)

यह जो बहशी कहलाते हैं। हम उन से दिल बहलाते हैं॥
नरगिस से आंख लड़ाते हैं। अपना अरमान मिटाते हैं॥
अब की भी आस लगाई है।
जब ऋतु बसन्त की आई है॥

(६)

पंकज खड़े हुए पानी में। आकर अपनी जौलानी में॥
झुक झुक कहते निज वाणी में। हम भी हैं इस हैरानी में॥
क्या ही यह शाने खुदाई है।
जो ऋतु बसन्त की आई है॥

रचयिता—बाबू बच्चालाल शर्म्मा, छपरा।

चला गया अब राज शिशिर का अजब छटा नव छाई है।
कोयल कुहुक उठी बागों में मेरे मन को भाई है॥
गगन विमल तरु-पल्लव नूतन कहिं सरसों कहिं राई है।
हिय हुलसावन जीय लुभावन ऋतु वसन्त की आई है॥

रचयिता--श्री० दशरथ प्रसाद शर्म्मा 'प्रसून', छपरा।

बहुत दिनों के अतिसंचित मैं धन को आज लुटाती हूं।
इसी तुच्छ धन को लेकर ही सेवा में अब आती हूँ॥
माना सुखसरिता की धारा सब के उर में बहती है।
पर इससे क्या हुआ हाय जब हृदय-कली ही जलती है॥
इसी तीव्र ज्वाला से जलता अपना हृदय दिखाती हूं।
अश्रु पुष्प लेकर नयनों से माला मञ्जु बनाती हूं॥
एक सुमन झरने नहिं पाता अन्य सुमन आ जाता है।
पुष्प पुंज से पुष्प निकलता उर कुछ ठण्ढक पाता है॥
नूतन फूलों की माला ले दासी कब की आई है।
ग्रहण करो इस तुच्छ भेंट को ऋतु वसन्त की आई है॥

रचयिता—बाबू राम अयोध्या सिंह, छपरा।

प्रिय पावन पुण्य बधाई है। अब ऋतु वसन्त की आई है॥
यह विमल प्रभा प्रगटाई है। नीलिमा गगन में छाई है॥
यह धूप वसन्ती लाई है। सब जीवों के मन भाई है॥
गत विषम शीत सुखदाई है। नहिं ताप भयङ्करताई है॥

समता में मञ्जुलताई है। पवनों में शीतलताई है॥
नव छटा अनूठी पाई है। पीयूष प्रभा बरसाई है॥
सुख सुगम सुधा संग लाई है। नूतनता सबने पाई है॥
दुःखों की आज बिदाई है। जब ऋतु बसन्त की आई है॥

समस्या:—

"सब देशों का ताज हमारा भारत प्यारा।"

रचयिता—बाबू भुवनेश्वर प्रसाद एम० ए० बी० एल०, छपरा।

(१)

कहाँ आज है इसका वह वैभव का आकर,
अखिल जगत पालित होता था जिसको पाकर?
आज अपेक्षित है, औरों का इसे सहारा,
सब देशों का ताज हमारा भारत प्यारा॥

(२)

बलि से हैं बलवान कहां? वे भीम कहां हैं?
मारूतनन्दन से बल में निस्सीम कहां हैं?
ठोकर खाता फिरता है वह दर दर मारा।
सब देशों का ताज हमारा भारत प्यारा॥

(३)

कहाँ आज हैं पन्ना? पद्मावती कहां हैं?
रिपु से लोहा लें वह दुर्गावती कहां हैं?
देख रहा है आज हाय! लुटती निज दारा।
सब देशों का ताज हमारा भारत प्यारा॥

(४)

वे बीती बातें हैं मन में उन्हें भुलाओ ।
याद दिलाकर उन्हें न दिल पर शूल चलाओ ॥
गत गौरव का पीट रहे हो व्यर्थ नगारा ।
सब देशों का ताज हमारा भारत प्यारा ॥

(५)

कोरी बातें अब न बनाओ, आगे आओ—
पूज्य पूर्वजों से कुछ तो होकर दिखलाओ ॥
डूब रहा है, पा जावे तृण मात्र सहारा ।
सब देशों का ताज हमारा भारत प्यारा ॥

(६)

छोड़ो ईर्ष्या द्वेष बैर आलस को तोड़ो ।
मिलकर आगे बढ़ो सभी से ममता जोड़ो ॥
फिर होगा "भुवनेश" जगत में सब से न्यारा ।
सब देशों का ताज हमारा भारत प्यारा ॥

---

(१)

रचयिता:—पं० रामनारायण मिश्र काव्यतीर्थ, छपरा ।

जिस के पद तल पड़ा हुआ रत्नाकर सारा ।
रजत-कनकमय मेरु मुकुट सा शोभित न्यारा ॥
मणि-मालासी सुखद गंग--यमुना की धारा ।
सब देशों का ताज हमारा भारत प्यारा ॥

(२)

हरी भरी लहलही मही जिसकी लोनी है।
सदा उर्वर, कहां कहां ऐसी छोनी है॥
गुन गौरव गति ज्ञान भरा है न्यारा न्यारा।
सब देशों का ताज हमारा भारत प्यारा॥

(३)

भरा हुआ है अस्त्र वेद का बड़ा खज़ाना।
अब तक जिनका नाम नहीं औरों ने जाना॥
धर्म युद्ध मैदान ठान कब किसने मारा।
सब देशों का ताज हमारा भारत प्यारा॥

(४)

करते हैं जो पुण्य स्वर्ग को वे जाते हैं।
किया वहां भी पुण्य यहां फिर वे आते हैं॥
सदा स्वर्ग से बढ़ा हुआ है विश्व--दुलारा—
सब देशों का ताज हमारा भारत प्यारा॥

रचयिता—बाबू चन्द्रदीप सिंह, वकील, छपरा।

(१)

जहां बसत सब समय सबहिं ऋतु सुखमय छाई।
वर्षा शरद हिमन्त शिशिर मधु ग्रीष्म सुहाई॥
उत्तर हिमगिरि शुभ्र पाग निज शिर पर धारा।
सब देशों का ताज हमारा भारत प्यारा॥

(२)

दक्षिण सागर धवल धौत की काञ्चनि काञ्चे ।
विन्ध्याचल दृढ़ वक्ष वृहत युत शोभित आछे ॥
नटवर वेश विभूषित शुभ्र दुकूलन वारा ।
सब देशों का ताज हमारा भारत प्यारा ॥

(३)

जहँ सर्जन सर्वाधिकारि सम जग में सोहत ।
नील रतन से वैद्यराज सब के मन मोहत ॥
श्री जगदीश समान ज्ञान—विज्ञान आगारा ।
सब देशों का ताज हमारा भारत प्यारा ॥

(४)

वाकीलकगण श्रेष्ठ घोष सम को जगमाहीं ।
श्री गाँधी सम नीतिनिपुण नर जहं प्रगटाहीं ॥
श्री गणेश सम गणित शास्त्र को जानन हारा ।
सब देशों का ताज हमारा भारत प्यारा ॥

(५)

आशुतोष सम न्याय निष्ठ प्रगटे कित भू पर ।
श्री सुरेन्द्र सम भाषक कहँ जगती तल ऊपर ॥
संस्कृतज्ञ शर्म्मा समान कोहि देश मँझारा ।
सब देशों का ताज हमारा भारत प्यारा ॥

रचयिता—बाबू भगवतीप्रसाद सिंह "शूर" छपरा।

धवल हिमाचल जहाँ प्रकृति ने है विस्तारा।
हर हर हर हर जहाँ बही गंगा की धारा॥
सिन्धु-अङ्क में युगल पार्श्व-संयुक्त किनारा।
मातृ-भूमि में रमा रहे मन सदा हमारा॥
विश्व-तिलक-सौभाग्य, लोक-लोचन का तारा।
सब देशों का ताज हमारा भारत प्यारा॥

समस्या—"ग्रीष्म के तपन में।"

रचयिता—पं० रामनारायण मिश्र काव्यतीर्थ, छपरा।

(१)

ह्यां ते गई कैसी अली कैसी बनि आई भली,
पहुँच न पाई लली लाल के लपन में।
उलझ गईं अलकें बिरुझ गई बेंदी शिर,
सरुझ गईं चञ्चल चखय पलकें झपन में।
छूटि गये चन्दन हू टूटि गई माला मञ्जु,
बिखर गये मोती मनु मैन के जपन में।
कैधौं न्हाय आई अबै कैधौं धाय आई सखी,
कैधौं स्वेद-बूंदें हुईं ग्रीष्म के तपन में।

नीको ना लगत नेक कौतुकसों लगन पान,
जोंकर आ पहुंच चैन नेकु के कनपन में।
रैहु से मन है जहां नेह के कलाई कहूं
ऋतु हो न लागे नहीं गाव के गुनन में.
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] कहुसकत हैं ग्रीषम के तपन में।

[illegible]—बाबू भुवनेश्वरप्रसाद बी० ए० बी० एल०, मुंगेर

कालिन्दीतट होहु ना कुसुम कलिकावार,
पावन से गुरावेन धाम ऐसे भुवन में।
होते पद्माकर जो रूप के बसाये खसखाने
खास खास आले हैं कूप भवन में।
देवकवि बैठ जाते बारहदरी के बीच,
चन्दन कपूर धूर पूरि निज तन में।
होते जो बिहारी 'सुजरेस' खोजे चीर लों,
प्रिया सों छिपाते ऐसे ग्रीषम के तपन में।
फहरैं फुहारे अति सीतल गुलाब जल,
पूरि रह्यो परिमल उसीर के खसन में।
भरे 'भुवनेश' त्यों कपूर की डली हैं धूर,
दीठि परै नीठि नीठि धुंधरि सदन में।

पंकज के [illegible] को [illegible] हैं [illegible] तापे,
पोढ़ी बल [illegible] [illegible] सब तन में ।
सिसिर [illegible] [illegible] लसत ललकाति है:
मानो [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] में ॥२॥
मनसा न [illegible] [illegible] [illegible] वागी बने
दीनता न [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तन में ।
मोह न [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] संग त्यागि:
लोभ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लीन धन में ।
चित्त ना [illegible] त्यों त्रिकुटी पे डीठ धरो:
ज्ञानी बने [illegible] [illegible] सनातन मन में ।
वासना [illegible] जो [illegible] नहीं भुवनेश,
व्यर्थ पंचाग्नि लीनी ग्रीष्म के तपन में ॥३॥

रचयिता— बाबू चन्द्रदीप सिंह बी० ए० बी० एल०, छपरा ।

जैसे विथा विरहिन की बढ़ति है जाने पाइ,
कन्त निज आए मन भाये हू सपन में ॥
जैसे बिन वारिद के सलिल न आवे 'चन्द्र'—
कृषक न पावें चैन बीज के वपन में ॥
जैसे जारि डारत हैं डार-पात फूल-फल,
दावानल लागि के निदाघ काल बन में ॥
तैसे आज आई मैंय विरह बढ़ाई आली ।
जारे तन विरही को ग्रीष्म के तपन में ॥

रचयिता—श्री सरयू-प्रसाद "भ्रमर", छपरा ।

काहू कर छोर [illegible] काहू कर तार देख,
काहू के [illegible] [illegible] बसे हैं [illegible] में ।
कोऊ लोट पोट करें [illegible] न कुटकी खोसें,
कोऊ हाथी खसखस लगावें सदन में ॥
कोऊ ठण्ढ शर्बत बनाय पिवें बर्फ [illegible],
कोऊ करें स्नान [illegible] मिलाय [illegible] हीं ।
नाना भाँति सज्जन उपाय करते हैं तो भी,
पावन नहीं हैं चैन ग्रीष्म के तपन में ॥

रचयिता—श्री [illegible] शर्म्मा, छपरा ।

फूला न समाता था तू भाग्य को सराहता था,
जब तू विचरता था वन-उपवन में ।
रे मलिन्द ! मतवाला बना फिरता था तब,
मकरन्द पान कर हंसता था मन में ॥
संचय करता यदि सुख होना पूर्व ही से,
बनता भिखारी नहीं इसके छपन में ।
रोओ, पछताओ उस मधुर स्मृति पर
तपो अब खूब इस ग्रीष्म के तपन में ॥

रचयिता—मो० महबूब अहमद, छपरा ।

विरहा अनल लगा है जब से हमारे मन में ।
मन हो रहा है व्याकुल इस ग्रीष्म के तपन में ॥

समस्या:—"परत लखाई है।"

रचयिता—पं० रामनारायण मिश्र काव्यतीर्थ, छपरा।

तेरे हेत हीय हहराने से हमेश रहे,
हेर हेर हारे हरे! होत ना सहाई है।
दूर दूर दौर दौर देखे दई द्वार द्वार,
दिन दिन दूनो दुख दीनता दिखाई है॥
कासों कहों, कौन सुने, कसक निकारे कौन,
कोरे बकवाद कौन करत सफाई है।
मीज में न मेघ में न मन में न मन्दिर में,
माधो! मञ्जु मूरति ना परत लखाई है॥

रचयिता—श्री सरयूप्रसाद, कटरा, छपरा।

ऐसी अँधियारी रैन कारी नहिं सूझे कछु
भवन भयावन न पिया निज भाई है।
पौन झकझोर करै चातक चकोर मोर
कूक उठे कोकिलादि मधुर सुहाई है।
काली घटा काम-रूप छाई छिति मण्डल में
हरी हरी भूमि पै लतान छवि छाई है।
पीय विन अबला इकान्त पाय सरयू जी
वीर विरहिन ज्वाल परत लखाई है॥

रचयिता:—बाबू भुवनेश्वरप्रसाद एम० ए० बी० एल०; छपरा।

(१)

पाटीदार मांग सटकारे कारे केसन की
त्योंही पड़ो ओठन में पान की ललाई है।
कवि 'भुवनेश' त्यों हिमानी और पाउडर की
सारे मुखमंडल पे छवि छिटकाई है॥
आंगुरी की मुंदरी में चमक कनी को चुन
रिस्टवाच भूषित त्यों नाजुक कलाई है।
बाबू बने बीबो कैसी छवि है निराली धाती
चूनदार चूनरी सो परत लखाई है॥

(२)

सेत भए केस पे न मन मलिनाई मिटी
कंप्यो सिर पै न अनुकंपा उर आई है।
बैन भहराने पै कुबोल की गई ना टेव
अभिमान झुक्यो नाहिं देह झुकि आई है॥
भुवनेश छाई शिथिलाई सब अंगन तौ
विविध बिलासन पै रुचि अधिकाई है।
देह में बुढ़ापे की दुहाई फिरी चारों ओर
तृष्णा तरुणी सो अब परत लखाई है॥

रचयिता—बाबूसरयूप्रसाद "भीम" छपरा।

सुन त्रयमासिक साहित्य-भवन उत्सव
छपरे की जनता आनन्द में समाई है।
आये हैं समोद साथ ले के इष्ट मित्र सब,
तारा के समान आभा चारो ओर छाई है।
पूरति समस्या भांति भांति की सुनाते कबि,
मानो इन्द्रदेव धार सुधा बरसाई है।
ऐसे ही रहा जो ये उत्साह आप लोग बीच,
उन्नति अवश्य शीघ्र परत लखाई है।

रचयिता—बाबू भगवती प्रसाद सिंह "शूर" छपरा।

अन्नपूरना ने लक्ष्मी से पूछी एक बात,
" काहे मोसे दिन दिन जात कतराई है
नाहीं बहु भांति संग मेरे आती जाती ; अब,
याही बस हाहाकार लोगन मचाई है "?
लक्ष्मी कही " ए सखी, लोक मति मारी गई,
मोहि के विदेश भेज चीजन मंगाई है।
देश में विदेश में दुनी में आज याहि लागि,
आपदा अनेक भांति परत लखाई है॥ "

समस्या—"घोर घन छायो है"

रचयिता—बाबू राजाराम टण्डन, इञ्जिनियर छपरा

आतप के क्रूर व्यवहार बिनसायो सबै,
सावन को साज यहि देश फिरि आयो है
नेह निरमोही, आश अपने पराये हाथ
प्यारे बिरही क्यों आज अधिक डरायो है।
जेठ की जरति प्यासे नाम रटि रटि गाथा,
तेरी एक बूंद आछे अङ्क धरि लायो है।
पपिहा पियारे ! टुक नैन तो उघार नेकु,
पी ; पी ; पी ! पुकार फेर घोर घन छायो है॥

रचयिता पं० रामनारायण मिश्र "काव्यतीर्थ" छपरा

(१)

उर बन-माल नहीं, ए तो बकमाल आली।
पीतपट ओर नहीं, दामिनी दिखायो है।
वंशी की न धुनि सखी ! गरज गरूर भरे,
मुरली न शोभा सुरचाप चढ़ि आयो है॥
मोर पंख धारे नहीं मोर हो करत शोर,
तन की न श्यामता, तमाम तम छायो है।
आयो बरसात वर साथ नहीं लायो हाय,
ये तो घनश्याम नहीं घोर घन छायो है॥

उमड़ि घुमड़ि घेरे घहर घमराड भरे,
घूमि घूमि चहुं धा ते झूमि झूमि आयो है ॥
मोरन के सोर भरे गरज गुमान भरे,
झिल्ली झनकार भेष भोरु सो बनायो है ॥
विशद वियोगिनी के वध के कृपाण राम,
चपला चमकायो है चिनगो लगायो है।
विरह बढ़ायो वेग विषम सतायो काम,
कहर मचायो घोर घोर घन छायो है।

रचयिता—श्री कन्हैया लाल जैन, छपरा।
बीति गो निदाघ दाघ आयो ऋतु पावस को,
मोरन के जौर भरे शोर मन भायो है।
छोर छोर छनदा को छूटि छूटि जात छटा,
आनंद अमन्द छकि छकि छिति छायो है॥
शीतल समीर गति धीर हो चलन लगी,
सरस संयोगी सज साज सुख पायो है।
बिरही बिचारन के बिरह बढ़ाने लाग्यो,
देखो देखो आज नभ घोर घन छायो है॥

रचयिता—श्री सरयू प्रसाद कटरा, छपरा।

आयोरी आषाढ़ घन गरज गरज नभ,
उमड़ घुमड़ घेरि घेरि जल लायो है
ताहि समै परी दीठि औचक जमुन तीर,
वाके तन व्यापी पीर धीर मन आयो है।
बहत पवन चउवाई अब झोर झार,
दामिनी दमक अति जीय डरपायो है।
घहरि घहरि घेरि गरजत मन्द मन्द,
देखो ब्रज मण्डल पै घोर घन छायो है॥

समस्या—"नयन है"

रचयिता—पं० रामनारायण मिश्र "काव्यतीर्थ", छपरा

(१)

कैधौं रूप सागर में बिषैले हैं ग्राह युग,
कैधौं ओप आनन में बिन्दु युग जगन हैं।
कैधौं अर्द्ध चन्द्र के उपासक हैं तारे युग,
कैधौं इन्दु-अङ्क में निशङ्क मृग शयन हैं॥
नासिका दुनाली हेत कैधौं युग गोली धरा,
कैधौं बङ्क भ्रू-धनु पै साजे शर मयन हैं।
कैधौं युग खञ्जन, कै मीन मद गञ्जन ये,
कैधौं युग कंञ्ज कैधौं कामिनी के नयन हैं।

पावन पीयूष मय प्रेम के पयोधि पूर,
पोखी युग मञ्जुमीन राखी मनु मैन हैं ।
लगि लगि जात कहूं प्रीति पगि पगि जात,
मुरि भगि जात कहूं नेक हूं न चैन है ।
धीरज धंसावें कहूं हिय हुलसावें कहूं,
रोष रंग जावें औ चलावे फेर सैन हैं
त्रिगुण तिरंगे तीर धीर वीर पीर बने;
बाँके औ लड़ाके मद छाके बने नैन हैं ।।

——

रचयिता श्री बब्बा लाल बर्म्मा ' शल्य ' छपरा ।

कैंधौ चल चपल दामिनी की है चकाचौंध,
कैंधौं बरुनी के बीच नीलम जयन हैं ।
कैंधौं सुहागिन के ये बैन (बोलिवे) के हेत,
काव्य कला कूट अवगुण्ठित बयन है
शल्य लाल कैंधो वरछी की तिरछी है अनी,
कैंधो मान मानिनी की चढ़ती सयन है ।
कैंधौं ये विहारी के बिहार करिबे के हेत,
भाव रस भरे भीरु राधा के नयय हैं "

——

रचयिता—श्री प्रभुनन्दन सिंह शर्म्मा, 'नन्दन'।

(१)

देख कर भी देश की दयनीयता,
जो पड़ा ग़फ़लत में करता सैन है।
है भरा निज स्वार्थ का जिसमें नशा
फूट क्यों जाता नहीं वह नैन है॥

(२)

बद नजर से घूरता पर-नारि को,
पाप में निशि दिन जो करता चैन है।
है निरखने में जो रत पर दोष को,
मार्ग है वह नरक का या नयन है॥

(३)

चीर सकता है कलेजा शेर का,
वह नहीं दुश्मन को देता चैन है।
पल में तड़पाता कलेजा बीर का,
या खुदा यह तीर है या नयन है॥

रचयिता—श्री पुरुषोत्तम दास गुप्त, कटरा, छपरा।

जाहि रंच प्रभा मिलि मृग मीन खंजन को;
वाहि विधि उपमा में कबि के वयन हैं।
गजब रंगीली जाहि शान सुखमा से भरि;
साँचे सनेहिन सुख दैनी सु सयन है।
देखत ही बनै कहि पार नहीं पावै कोऊ,
हेरि के हेरायो मति रति हू मयन है।
सुठि सुकुमार कमनीय ऐसे और नहीं,
हरे-हरे जैसे सिय-पिय के नयन है॥

समस्याः—"देखतो।"

रचयिताः रामनारायण मिश्र काव्यतीर्थ।

(१)

श्याम ही त्रिभङ्ग सङ्ग श्यामा रंगी श्याम रंग,
अङ्ग अङ्ग श्याम के अनङ्ग ढङ्ग देखती।
डोलति तो श्याम वन बोलति तो श्याम श्याम,
ढूंढ़ती तो श्याम ही को श्याम द्युति पेखती॥
श्याम नभ श्याम महि आठहूँ दिशान श्याम,
श्याम को निमैषती है श्याम ही निरेखती॥
श्याम तन श्याम मन असन वसन श्याम,
आँखें भई श्याम श्याम, श्याम श्याम देखतो॥

रचयिता:—बाबू भगवतीप्रसाद सिंह, विशारद, छपरा ।

कहि गये आवन न आये मन भावन ये—
चिन्ता कलपावन ते भूमि नख लेखती ।
द्वार लगि धावन अंदेश मन लागि लगी,
काक उचरावन ते सगुन परेखती ॥
लगन लगावन में आगम आनन्द भरो,
मन्द मुसुकान सो अमन्द भाग पेखती ।
कुसल उसल पूछिबे की सुधि भूलि प्यारी,
प्यारे मुखचन्द को चकोरी बनि देखती ॥

रचयिता:—पं० मुकुन्द शर्म्मा कथावाचक, कोरा सम्होता ।

मिथिला की नारी रसवारी सुकुमारी सब,
यौवन बहारी राग-रंग में उमेखती ।
साजि के समाज साज आनन्द में गाज गाज,
दौरि चली मार्ग में सखीन को सरेखती ॥
गाय रही गीत प्रेम रीति को दिखाय अली,
हंसती हंसाती कला काम की समेखती ।
सिय के स्वयम्बर में आई हुलसाई सब,
सानन्द 'मुकुन्द' भूप राम-रूप देखती ।

रचयिताः—श्री सरयूप्रसाद 'भीम' तिनकोनियां, छपरा।

बार बार करती विलाप हौं दया निधान,
और बार बार यह पाती लिख भेजती।
एक द्रौपदी के हेत द्वारिका से दौरि आये,
आज केती द्रौपदी अपार दुख झेलती॥
किन्तु आप आते न तो देते हैं सहारा कछु,
हाय पत्र का भी न जवाब ही निरेखती।
'भीम' विष खाय डूब जाती नाथ कब की न
किन्तु राह रावरे ही आवन की देखती॥

स्वतन्त्र विषयः—

"दीपक"

रचयिताः—प्रभूनन्दन सिंह शर्म्मा "नन्दन" विद्यार्थी
जिला स्कूल, छपरा।

(१)

मैं मुफलिस का दीपक हूं मेरी यह करुण कहानी है।
किसे सुनाऊं? समझेगी क्या? यह दुनियां दीवानी है॥
यह जीवन भी जीवन है क्या? इससे तो मरना उत्तम।
कुछ कुछ बुझा हुआ सा रहता हूं मैं सन्ध्या से हरदम॥

(२)

कितनी रातें पड़े-पड़े कोने में कट जाती यों ही
कभी सूत्र तो स्नेह नहीं है कभी स्नेह तो सूत्र नहीं ॥
कैसी चोट पहुंचती दिल पर है जब कोई परवाना ।
भूला भटका आ जाता है चूर प्रेम में दीवाना ॥

(३)

बुझ जाता हूं स्नेह बिना मैं जब चलता होने बलिदान ।
फिर जाता है हा ! निराश हो वह मेरा पागल मिहमान ॥
रूप नहीं है, रंग नहीं है, नहीं शिखा में चञ्चलता ।
तेज नहीं है, नहीं उजाला, घुटक-घुटक कर हूँ जलता ॥
रिक्त पड़ा हूं, तरस रहा हूं कोई दानी आ जाता ।
बहुत नहीं दो चार बूंद ही स्नेह-सुधा टपका जाता ॥

रचयिताः—पं० मुकुन्द शर्म्मा कथावाचक, सम्होता छपरा ।

मृत्तिका को काट कूट चक्र पै चढ़ाय चट,
दण्ड से कुलाल फेर घूर्मित कराता है ।
कर से मरोड़ मोड़ आकृत बनाय नीके
सुबह से साँझ तक घाम में तपाता है ॥
पोत के कषाय तिल ईन्धन जलाय फेर,
प्रबल प्रचण्ड अग्नि बार के पकाता है ।
ऐसे ऐसे दुख पाये दीपक "मुकुन्द" जब
कामिनी के अञ्चल में आनन्द उड़ाता है ॥

रचयिता:—बाबू रामअयोध्या सिंह अध्यापक,
सारन एकडमी छपरा ।

(१)

अहह दीपक! दीपक मोद के,
वरद, विज्ञ विवेक-निधान हो ।
सरल है तव जीवन की कथा,
विशद हो तुम प्राप्त प्रकाम हो ॥

(२)

निज छटा छवि के शुभ दान से,
कर रहे सब का उपकार हो ।
जल रहे तुम सन्तत आप हो,
उपकृतों पर ही बलिदान हो ॥

(३)

उपकृता स चराचर मण्डली,
तव प्रभा परिपूर्ण प्रकाशिता ।
निज सदा सन है तम-क्रोड़ में,
सफल जीवन है तव धन्य हो ॥

रचयिता:—पं० रामनारायण मिश्र । काव्यतर्थ, छपरा

हे दीपक! दीपक! प्रदीप! प्रताप तेरा,
आलोक लोचन ललाम बना घनेरा ।
हे काम-रूप! अति सुन्दर वेश धारी,
है विश्व व्यापक महा महिमा तुम्हारी ॥

रचयिता:—बाबू भगवतीप्रसाद सिंह विशारद "शूर" द्वारा।

(१)

तुम्हें जब ध्यान में हम ला रहे हैं।
अनेकों भाव मन में आ रहे हैं॥
तुम्हारा रूप ऐ दीपक! है न्यारा।
नहीं मालूम किसने ये संवारा॥

(२)

वही तुमको जलाता या जिलाता।
वही तुमको बुझाता या सुलाता॥
हवा लगने से तुम क्यों शान्त होते।
हो अपना स्वत्व निज हाथों से खोते॥

(३)

भभक उठते हो जब है तेल घटता।
तड़प कर हा तुम्हारा दम निकलता॥
नहीं मालूम किससे लौ लगी है।
कहाँ आशा तुम्हारी जा बंधी है॥

(४)

कहां का मौन तुमने है ये साधा।
नहीं मेरी समझ में कुछ भी आता॥
ये क्या अनरीति तुमने है विचारी।
अरुण निकला हुई सन्ध्या तुम्हारी॥

(५)

जगत सोता है तुम रहते हो जगते ।
जगत जगता है तुम आराम करते ॥
हो योगी या कि भोगी कह सुनाते ?
इशारे से हो कुछ आखिर बनाते ॥

(६)

फतिङ्गों को हो किस कारण जलाते ?
इन्हें क्यों खाक में तुम हो मिलाते ?
गज़ब की जोति तुमने है ये पाई ।
अंधेर की खलिश तुमने मिटाई ॥

(७)

पवन से किस लिए है द्वेष तुमको ।
ये देता किस लिए है क्लेश तुमको ॥
किसी से हाथ अपना क्यों बढ़ाते ।
हो अपना शीश क्यों उससे कटाते ॥

(८)

किसी से तन नहीं अपना छुलाते ।
यों ही सौन्दर्य्य अपना हो लुटाते ॥
बताओगे तुम अपना माजरा कब
भला मुझसे तुम्हें कोई है मतलब ॥

उर्दू पूर्त्तियां।

"आँखें खुली हुई हैं।"

रचयिताः—शैदाय सुखन जनाब मौलवी महबूब अहमद साहब, 'अक्स' छपरवी।

निकली न ज़िन्दगी में जो दीद की तमन्ना।
मरने प भी हमारी आँखें खुली हुई हैं॥
वह आके देख लेते दीदार की ये हसरत।
मरने प भी हमारी आंखें खुली हुई हैं॥
कब जान छोड़ता है संसार का झमेला।
यारों की जिस घड़ी तक आंखें खुली हुई हैं॥
जो काम के है बस में अन्धा उसे समझिये।
बेकार उसकी यों ही आंखें खुली हुई हैं॥
इस उम्र में भी 'अक्स' तुमको नज़र न आया।
वह कौन है कि जिसकी आंखें खुली हुई है॥

"चल गई"

रचयिताः—मौलवी मुहम्मद हनीफ साहब, 'हनीफ़' मुख्तार छपरा

मुद्दत की आरज़ू मेरे दिल से निकल गई।
उस शोख़ की छुरी मेरी गर्दन प चल गई॥
वादा किया है आने को गो झूठ ही सही।
कुछ देर तक तो मेरी तबीयत बहल गई॥
शुक्रे ख़ोदा कि हाल मेरा पूछते हैं वो।
तक़दीर मेरी बिगडी हुई अब बदल गई॥
क्यों देखा साथ यार के अग़ियार को 'हनीफ़'।
आंखों का था कसूर छुरी दिल प चल गई॥

रचयिता:—

मौलवी अमजद अली साहब, 'अमजद' मुख़तार पुरा।

उनकी छुरी निगाह की पै हम जो चल गई।
कुलफत जो दर्द दिल की थी एक दम निव ठ गई॥

दिल बानिये फसाद है आखों का क्या क़सूर।
इत्ताफ था यही कि छुरी दिल प चर गई॥

चर्खे कुहन ने ऐसा उलट फेर कर दिया।
एक पल में सारी हालते दुनिया बदल गई॥

'अमजद' वफूरे ग़म से था मग़मूम रात दिन।
बज़्मे सोख़न में आके तबीयत ब ल गई।

शोक पर शोक और संताप पर संताप उठाने वालों के हृदय की वेदना अकथनीय होती है। यह संवाद सू त करते हुए असीम दुख होता है कि हम लोगों के काव्य- रषद् के एक बड़े योग्य सभासद पं० रामनारायण जी मिश्र, ाव्यतीर्थ का हाल ही में असमय स्वर्ग-वास हो गया। हा! पण्डितजी की उस मधुर वाणी में उनकी वे मनोहर रचनायें अ सुनने को प्राप्त न होगी। ईश्वर आपकी आत्मा को श न्त प्रदान करे।

मंत्री

भा० सा भवन।

भारतीय साहित्यभवनके

वर्त्तमान पदाधिकारियोंकी नामावली

१.	बाबू भगवतीप्रसाद सिंह, विशारद, ज़मींदार	सभापति
२.	बाबू माधवचरण, इन्कम टैक्स अफ़सर	उप-सभापति
३.	बाबू नन्दकिशोर जैन, डिप्टी मैजिस्ट्रेट	,,
४	बाबू रामरतन दास, रईस	,,
५.	बाबू भुवनेश्वर प्रसाद, एम. ए., बी. एल.	सदस्य
६.	बाबू साँवलिया विहारी लाल वर्म्मा, एम. ए., बी. एल.	,,
७.	बाबू पुष्पदन्त प्रसाद जैन, ज़मींदार	,,
८.	बाबू राजाराम टण्डन, इलेक्ट्रिक इंजीनियर	,,
९.	बाबू रामाप्रसाद सिंह, ज़मींदार	,,
१०.	पं० उद्धव उपाध्याय	,,
११.	बाबू हरिहरनाथ वर्म्मा, वकील	,,
१२.	बाबू सुखानन्द जैन, बैङ्कर	,,
१३.	बाबू रामअयोध्या सिंह, अध्यापक, सारन एकेडमी	,,
१४.	बाबू वासुदेव प्रसाद, व्यापारी	,,
१५	बाबू काशीनाथ सरावगी, रईस	,,
१६.	बाबू तेजपाल सरावगी, बैङ्कर	कोषाध्यक्ष
१७.	बाबू राजनाथ सहाय, अध्यापक, सारन एकेडमी	मंत्री
१८.	बाबू नन्दकिशोर लाल जैन, रईस	संयुक्त मंत्री
१९.	बाबू चन्दन प्रसाद, क्लर्क, ज़िला स्कूल, छपरा	उपमंत्री
२०.	बाबू द्वारका नारायण, एल. एम. पी.	उपमंत्री
२१.	बाबू रघुनाथ प्रसाद	पुस्तकाध्यक्ष
२२.	बाबू महादेव प्रसाद चौधरी, बैङ्कर व व्यापारी	औडिटर